फरीदाबाद के भाजपाई-कांग्रेसी अपने घरों, दफ्तरों में क्यों नहीं बनाते कोविड सेंटर

हर नेता के पास हैं एक से ज्यादा कोठियां और दफ्तर, लेकिन गरीबों की फिक्र नहीं

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबाद: शहर में अमीर नेताओं की कमी नहीं है। ये सिर्फ कांग्रेस में ही नहीं भाजपा और इनैलो में भी हैं। लेकिन क्या आपने किसी के बारे में सुना कि उन्होंने अपने दूसरे घर या दफ्तर को कोविड सेंटर में बदल दिया हो। अलबत्ता ये नेता दूसरों लोगों द्वारा बनाए गए कोविड सेंटरों का उद्घाटन करने जरूर पहुंचे। दरअसल, यह सवाल अब हर बड़े शहर में जुझारू मीडिया ने उठाना शुरू कर दिया है। हुआ यह कि 19 मई को मीडिया में यह खबर आई कि बिहार में नेता प्रतिपक्ष और आरजेडी विधायक दल के नेता तेजस्वी यादव ने अपने सरकारी आवास को कोविड सेंटर में बदल दिया है। इसके जवाब में बिहार की नीतीश कुमार सरकार भीगी बिल्ली बनती नजर आई, भाजपा के लोग कुतर्क में जुट गए लेकिन इस खबर का असर हुआ और हर तरफ तेजस्वी की इस पहल की तारीफ हो रही है।

फरीदाबाद का हाल

हरियाणा प्रदेश में एक से एक पैसे वाले नेता हर पार्टी में हैं। सभी समाजसेवा का दम भरते हैं लेकिन हम स्थानीय यानी फरीदाबाद के नेताओं की बात करेंगे।

फरीदाबाद के नेताओं में इस समय सबसे अमीर नेताओं में केंद्रीय मंत्री कृष्णपाल गूजर हैं। जिनके पास न सिर्फ अनगिनत दफ्तर हैं बल्कि प्रॉपर्टी बिजनेस में होने की वजह से कई अपार्टमेंट और टॉवर भी उनके पास हैं। ग्रेटर फरीदाबाद में उनके पास अथाह जमीन है। सेक्टर 28 में जहां उनका अपना आवास है, उसके पास ही उनका घर से भी बड़ा दफ्तर है। इसके अलावा आसपास की कई कोठियों की गतिविधियां भी उनसे जुड़ी हुई हैं। कृष्णपाल चाहते तो जब कोरोना शिखर पर था, वे अपने किसी भी दफ्तर को कोविड सेंटर में बदल सकते थे। लेकिन अब घर के पास वाला दफ्तर सुनसान पड़ा है। जिसका फिलहाल कोई इस्तेमाल भी नहीं हो रहा है। जनता भी कोरोना की वजह से मंत्री से मिलने नहीं आ रही है।

सेक्टर-28 फरीदाबाद में केन्द्रीय मंत्री का विशाल दफ्तर आजकल बंद पड़ा है

पुराने उद्योगपति और अब भाजपा विधायक नरेन्द्र गुप्ता की अमीरी के चर्चे शहर में कई तरह से फैले हुए हैं। जब विपुल गोयल की जगह उन्हें भाजपा टिकट मिली तो इस चर्चा को और भी बल मिला। उन्होंने तो अपनी कोठी ही जिला भाजपा कार्यालय के लिए दे दी है। लेकिन कोविड सेंटर के लिए इस विधायक के पास कोई कोठी या जगह नहीं है।

विधाक सीमा त्रिखा शुरू से बाकी विधायकों के मुकाबले अमीर नहीं थीं लेकिन 2014 में चुनाव जीतने के बाद और 2019 में दोबारा चुने जाने के बाद सीमा की आर्थिक स्थिति में शानदार सुधार हुआ है। एनआईटी इलाके में उनका इतना रसूख है कि वो कहीं भी गरीब पंजाबियों के लिए कोविड सेंटर खुलवा सकती थीं लेकिन उन्हें ज्यादा दिलचस्पी श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल के कथित कोविड सेंटर और एनआईटी मंडल अध्यक्ष अमित आहूजा के होटल में बने व्यावसायिक कोविड सेंटर में है। लेकिन वो इतनी सक्षम हैं कि अलग से गरीबों के लिए कोविड सेंटर अपनी तमाम जगहों में से किसी एक जगह खुलवा सकती हैं।

भाजपा विधायक राजेश नागर भी पैसे और संपत्ति के मामले में किसी से कम नहीं हैं। उनके पास पुराना पैसा और जमीन है। लेकिन अब जबकि कोरोना गांवों की तरफ बढ़ चला है, राजेश नागर ने कहीं भी अपनी जेब से कोई कोविड सेंटर अपनी किसी जमीन पर नहीं खुलवाया।

मंत्री मूलचंद शर्मा भी पुराने रईस तो नहीं हैं लेकिन भाजपा में आने के बाद उनका रसूख बढ़ा है और अब ठीकठाक संपत्ति के मालिक हैं। लेकिन मूलचंद शर्मा का रसूख इतना है कि वे अपने किसी भी चेले चपाटे से कहकर बल्लभगढ़ में कोविड सेंटर खुलवा सकते हैं। लेकिन उन्होंने इस पर ध्यान नहीं दिया। हालांकि बल्लभगढ़ में कोरोना का प्रकोप कम ही रहा। लेकिन वहां एसडीएम अपराजिता ने ठीकठाक कंट्रोल किया तो मूलचंद शर्मा को खास भागदौड़ नहीं करनी पड़ी।

कांग्रेस विधायक नीरज शर्मा के पास भी पैसे की कमी नहीं है। उनके पिता शिवचरण शर्मा उनके लिए काफी कुछ छोड़कर गए हैं लेकिन नीरज शर्मा ने अपनी किसी निजी जगह पर कोई कोविड सेंटर नहीं खुलवाया। माना की आप विपक्ष में है और आपका काम सवाल उठाना है लेकिन आपके पास जो पैसा है, उसमें जनता का हिस्सा है। उसका थोड़ा सा हिस्सा जनता पर खर्च नहीं करेंगे तो किस पर करेंगे। सिर्फ मीडिया में बयान छपवाने से विपक्षी नेता का जिम्मेदारी खत्म नहीं हो जाती।

इस सूची में पूर्व मंत्री विपुल गोयल के बिना तथ्य अधूरे रहेंगे। विपुल के पास भी पैसे की कमी नहीं है। भाजपा में आने से पहले और मंत्री बनने से बहुत पहले से ही उनके पास अथाह संपत्ति है। प्रॉपर्टी बिजनेस में विपुल गोयल ने काफी पैसा कमाया है। लेकिन वह समाजसेवा और धार्मिक कार्यों में पैसे लुटाने के लिए भी जाने जाते हैं। सेक्टर 16 में सागर सिनेमा को खरीदकर उन्होंने अपना दफ्तर वहां बना रखा है और वहां से उनकी टीम जनता की समस्या के समाधान के लिए तैयार बैठी रहती है। अभी जब कोरोना फैला तो भी उनकी टीम चुपचाप अस्पतालों में, डॉक्टरों को फोन करके लोगों की परेशानियों को दूर करने की कोशिश करती रही। कई विशेषज्ञ डॉक्टरों की सेवाएं विपुल गोयल के अनुरोध पर कई मरीजों को मिलीं। लेकिन इन सब के लिए भाजपा ने न तो उन्हें श्रेय दिया और न ही उन्होंने भाजपा से श्रेय मांगा।

तेजस्वी यादव ने ऐसा क्या किया

तेजस्वी यादव और उनकी आरजेडी पार्टी से तमाम असहमतियों के बावजूद उनकी इस पहल की तारीफ़ करनी पड़ेगी कि उन्होंने पटना में 1, पोलो रोड पर अपने सरकारी आवास को कोविड सेंटर में बदल दिया है।

उन्होंने बिहार सरकार से कहा है कि वो पचास बेड के इस कोविड सेंटर को टेकओवर करके ग़रीबों का इलाज करे।

तेजस्वी यादव नेता विपक्ष हैं और उन्हें काफ़ी बड़ा सरकारी आवास मिला हुआ है। यहाँ उन्होंने बेड से लेकर सारा मेडिकल इन्फ़्रास्ट्रक्चर मुहैया करा दिया है। लेकिन वो यहाँ डॉक्टर और हेल्थ वर्कर नहीं मुहैया करा सकते क्योंकि वह नियमानुसार बिहार सरकार ही दे सकती है। लेकिन बिहार सरकार ने वहां डॉक्टर और नर्सिंग स्टाफ भेजने की जगह उनका मजाक उड़ाना शुरू कर दिया।

तेजस्वी की इस पहल पर दरअसल, जेडीयू और सीएम नीतीश कुमार बहुत नाराज़ हैं। उन्होंने ऐसा सोचा भी नहीं था कि कोई जनप्रतिनिधि ऐसा भी कर सकता है। अपनी खाल बचाने के लिए अब जेडीयू ने बयान दिया है कि यह सब ड्रामा है। तेजस्वी यह पहल दिल्ली में बैठकर क्यों कर रहे हैं, पटना क्यों नहीं आ रहे हैं।

हालांकि जेडीयू की यह प्रतिक्रिया बचकानी है। तेजस्वी अपने पिता लालू यादव के इलाज के सिलसिले में दिल्ली में हैं। अगर वो यहाँ से बैठकर अपने सरकारी आवास पर सारी चीज़ें मुहैया करा रहे हैं तो इसमें हर्ज क्या है। देश का पीएम और बिहार का सीएम जब खुद किसी अस्पताल में निरीक्षण के लिए जाने को तैयार नहीं हैं तो तेजस्वी से ही पटना आने की उम्मीद क्यों की जा रही है ?जेडीयू ने मुद्दे को घुमाने की कोशिश की है। वह चाहती है कि तेजस्वी के सरकारी आवास में बनाए गए कोविड सेंटर पर बात न हो, बल्कि बात इस पर हो कि तेजस्वी पटना से क्यों गायब हैं। इसी तरह भाजपा नेताओं ने भी तेजस्वी को घेरने की कोशिश की है लेकिन दबी जबान से वे ये भी कह रहे हैं कि तेजस्वी ने यह पहल करके हम लोगों की घनघोर बेइज्जती कर दी है।

आरोपी पकड़ने के बाद फरीदाबाद पुलिस कभी-कभी धर्म के आधार पर देती है सूचना

संगीन आरोपी को पकड़ने के बाद एक नाम छिपाती है तो दूसरे का नाम धर्म की वजह से बता देती है

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबाद: ये है इनका तरीका, जिससे क्या कुछ नहीं झलकता। फरीदाबाद पुलिस ने 14 और 15 मई को अपने ट्विटर हैंडल पर दो आरोपियों के फोटो जारी करते हुए दो अलग-अलग तरह की टिप्पणियां कीं, जिससे उसकी मानसिकता का पता चलता है। देश में दिल्ली पुलिस, मुम्बई पुलिस, बेंगलुरु पुलिस भी है, जिनके सोशल मीडिया एकाउंट हैं और मजाल है कि कभी किसी ट्वीट के जरिए उसने साम्प्रदायिक भाषा का इस्तेमाल किया हो। इतना ही नहीं हरियाणा में ही रोहतक, जीन्द, भिवानी, हिसार की पुलिस है, जिसके ट्विटर हैंडल से कभी साम्प्रदायिक सोच वाले ट्वीट नहीं किए जाते लेकिन फरीदाबाद पुलिस ने सभी को पीछे छोड़ दिया है। ऐसा नहीं है कि फरीदाबाद पुलिस की यह आदत पुरानी हो, यह आदत नई है कि हर ट्वीट में सूचना देने की बजाय उसको मजाकिया बनाने की कोशिश में कुछ और ही बात कह दी जाती है लेकिन उसका असर जनमानस पर गलत पड़ता है।

इस खबर के साथ दो ट्वीट दिए जा रहे हैं, जिन्हें पढ़कर आप फरीदाबाद पुलिस की भाषा पर खुद विचार कीजिए।

14 मई की घटना

फरीदाबाद पुलिस ने रेमडिसविर इंजेक्शन के साथ आरोपी को पकड़ा। बताया गया कि उसके पास से 6 रेमडिसविर इंजेक्शन बरामद किए गए। आरोपी का नाम ट्वीट से गायब है और उसे कालाबाजारी-बाज लिखा गया है। इसके साथ हैशटैग ये नहीं सुधेंगे चलाया गया। आरोपी का नाम पुलिस ने क्यों छिपाया, इसके बारे में उसे बेहतर मालूम होगा।

15 मई की घटना

फरीदाबाद पुलिस ने आक्सीजन सिलेंडर के साथ आरोपी को पकड़ा। ट्विटर पर आरोपी का फोटो जारी करते हुए पुलिस ने लिखा - मियां सलीम आक्सीजन की कालाबाजारी करते धरे गए। दो सिलेंडर और एक आटो के साथ। अब कुछ दिन दोजख (नर्क) में निकालेंगे।

साम्प्रदायिक सोच

14 और 15 मई के ट्वीट को पढ़ने से साफ पता चला रहा है कि फरीदाबाद पुलिस ने दो आरोपियों को पकड़ा, एक का नाम छिपाया जबकि दूसरे का नाम, धर्म और उसकी दोजख भी तय कर दी। सलीम के साथ मियां शब्द जानबूझ कर लिखा गया, मुस्लिम नाम में मियां शब्द का इस्तेमाल नहीं होता है लेकिन पुलिस ने जानबूझकर किया। यह खुलेआम साम्प्रदायिकता फैलाना है।

इस तरह की ब्लैकमार्केटिंग वालों से मजदूर मोर्चा की कोई सहानुभूति नहीं है। लेकिन अगर किसी आरोपी के साथ उसकी जाति और धर्म को लेकर भेदभाव किया जाएगा तो उस पर आपत्ति स्वाभाविक है। अदालतों ने पुलिस और मीडिया के लिए इस संबंध में कुछ मानक तय कर रखे हैं। जिसका दोनों पक्षों को ध्यान रखना चाहिए। हाल ही में दिल्ली में न्यू फ्रेंड्स कॉलोनी पुलिस ने ईएसआई मेडिकल कॉलेज के एक कर्मचारी रघुवीर को इंजेक्शन की कालाबाजारी में गिरफ्तार किया। दिल्ली पुलिस चाहती तो उसका पूरा नाम रघुवीर जाट बता सकती थी, क्योंकि रघुवीर ने अपने प्रोफाइल तक में जाट शब्द का इस्तेमाल किया हुआ है लेकिन एक जिम्मेदार पुलिस की भूमिका निभाते हुए दिल्ली पुलिस ने आरोपी का सिर्फ नाम बताया। दिल्ली पुलिस अपने ट्वीट में यह तक नहीं लिखती कि अब मजा चखाया जाएगा, या अब जेल में मजे चखेंगे। लेकिन फरीदाबाद पुलिस पहले से ही आरोपी की जन्नत और दोजख तय कर देती है। हरियाणा पुलिस के अफसरों को सोचना चाहिए कि वे सार्वजनिक जीवन में अगर इस तरह की बचकानी हरकतों को बढ़ावा देंगे तो इसके अच्छे संकेत नहीं जाएंगे। कई अधिकारी जिस तरह अपने ट्विवटर हैंडल पर अपनी आस्था को प्रकट करते नजर आते हैं, हम उसकी गहराई में नहीं जाना चाहते लेकिन जब आप खुद को आईपीएस और आईएएस लिखते हैं और सार्वजनिक जीवन या पब्लिक डीलिंग में हैं तो आपको अपनी आस्था घर रखनी चाहिए, वह सार्वजनिक मंचों पर प्रदर्शन की चीज नहीं है। अतीत में हरियाणा के आला पुलिस अफसर ऐसी मिसालें पेश करते रहे हैं।

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें, कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ़ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें।

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड।
2. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन
3. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे।
4. जितेन्द्र, बाटा सेंटर - 9971064207
5. राम खिलावन-बल्लभगढ़ बस स्टैंड के सामने 9891164794
6. मोती पाहुजा - मिनार गेट पलवल, 9255029919
7. सुरेन्द्र बघेल - बस अड्डा होडल - 9991742421